

## अकबरयुगीन प्रमुख वाद्ययंत्र

अंकुर वर्मा



शोध छात्र, मध्यकालीन एवं  
आधुनिक इतिहास विभाग,  
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,  
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

संगीत के प्रति मुगलों की रुचि सर्वविदित है। प्रथम मुगल सम्राट जहीरुद्दीन मोहम्मद बाबर से लेकर औरंगजेब तक सभी संगीत से लगाव रखते थे। औरंगजेब ने यद्यपि शासन के दसवें वर्ष संगीत को प्रतिबंधित कर दिया था, किन्तु यह उल्लेखनीय है कि वह स्वयं एक निपुण वीणावादक था। बाबर भी संगीत का शौकीन था और हुमायूं भी। वे अक्सर शाम के समय अपने शिविर में संगीत सभाओं का आयोजन किया करते थे। संगीत की यही परम्परा अकबर के समय अपने चरम पर पहुँची जब संगीत के शास्त्रीय पक्ष का भी विकास हुआ और संगीतज्ञों को दरबार में खुले हृदय से आमंत्रण व संरक्षण दिया गया।

संगीत में वाद्ययंत्रों की बड़ी महत्ता होती है तथा इनके सही प्रयोग से मधुरता व आनन्द में कई गुना वृद्धि हो जाती है। मुगलकाल, विशेषरूप से अकबर का युग वाद्ययंत्रों की दृष्टि से एक समृद्ध दौर रहा। इस काल में भारतीय वाद्ययंत्रों के साथ-साथ अरबी-फारसी वाद्ययंत्रों का समान रूप से प्रयोग किया गया।

हिन्द-इस्लामी संस्कृति, जो अकबर के समय चरम पर पहुँच रही थी, संगीत तथा वाद्ययंत्रों पर भी इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ा। आइन-ए-अकबरी समेत अनेक समकालीन व परवर्ती स्रोतों से इनकी पर्याप्त जानकारी मिलती है।

बाबर व हुमायूं के समय से ही रबाब, तबला, सारंगी, बरबत<sup>1</sup>, गिटार, वीणा, गीचक जैसे वाद्यों का उल्लेख मिलता है। इनमें से ज्यादातर मुगलों के आगमन के पूर्व से ही इस्तेमाल किये जा रहे थे। किंतु अकबर के समय क्रांतिकारी रूप से इनके एवं अन्य नवीन वाद्यों के प्रयोग को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। विस्तार से अकबरयुगीन वाद्ययंत्रों का वर्णन किया जाए तो, आइन-ए-अकबरी में अबुल फजल ने “यंत्र”<sup>2</sup> को एक प्रमुख वाद्ययंत्र माना है। एक गज लम्बे दण्ड वाले इस वाद्य में दो कटे तुम्बों को नीचे की तरफ लगाया जाता था। इसमें सोलह परदों तथा पाँच तारों का उपयोग किया जाता था तथा स्वरों को ऊपर-नीचे करने हेतु परदे खिसकाये जाते थे। कुछ विद्वान, जैसे

कल्लिनाथ, त्रितंत्री वीणा को ही यंत्र कहते हैं<sup>3</sup> जिसमें कालांतर में तीन के स्थान पर पाँच तारों का उपयोग किया जाने लगा था। आधुनिक सितार व तम्बूरे का उद्भव इसी से जोड़कर देखा जाता है।

दूसरे प्रमुख वाद्ययंत्र की चर्चा करें तो 'वीणा' का उल्लेख प्रचुरता से मिलता है। यह एक भारतीय वाद्ययंत्र था। यह 'यंत्र' के ही समान होता था। आइन में वीणा का वर्णन मिलता है। उस समय प्रचलन की दृष्टि से देखें तो एकतंत्री वीणा<sup>4</sup>, आलापिनी वीणा तथा सरवीणा प्रमुख थीं। एक तार वाली एकतंत्री वीणा को सभी वीणाओं की जन्मदात्री माना जाता है।<sup>5</sup> आलापिनी वीणा के विषय में शारंगदेवकृत संगीत रत्नाकर एवं वाद्यप्रकाश, यंत्रकोष, वीणाप्रपाठक जैसे ग्रंथों में चर्चा मिलती है। यह तीन तार वाली होती थी। सरवीणा वीणा जैसी ही थी लेकिन इसमें फ्रेट्स का अभाव होता था।

'अमृति' नामक एक तंतुवाद्य के बारे में अबुल फजल ने आइन में विवरण दिया है, यद्यपि इसके वादन विधि के बारे में जानकारी अपर्याप्त है। यह वाद्ययंत्र वीणा से छोटे सिर वाला तथा एक तार वाला होता था जिस पर सभी सप्तक बनाये जा सकते थे।<sup>7</sup>

अकबर के समय प्रचलित एक बेहद महत्वपूर्ण वाद्ययंत्र था— 'रबाब'। इसके उद्भव के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ इसे अरबी तो कुछ फारसी मूल का वाद्य मानते हैं। यह सरोद व सारंगी के मध्य का वाद्य माना जाता है अर्थात् यदि इसे गज से बजाया जाए तो सारंगी जैसा तथा त्रिकोण(जवा) से बजाये जाने पर यह सरोद जैसा प्रतीत होता था। वर्तमान का शास्त्रीय वाद्य सरोद इसका परिष्कृत रूप है जिसमें धातु प्लेट का उपयोग किया जाता है।<sup>8</sup>

अबुल फजल ने एक वाद्ययंत्र 'स्वरमण्डल' का उल्लेख किया है, जिसे वह 'कानून' नामक एक अन्य वाद्य से मिलता जुलता बताते हैं। दोनों ही तंतुवाद्य थे। फर्क था तो केवल तारों की संख्या का। जहाँ कानून 28 तारों वाला वाद्य था, वहीं स्वरमण्डल में 21 तार होते थे।<sup>9</sup> लगभग चौकोर इस वाद्य में कील / खूँटी पर तार बंधे होते थे तथा एक चाभी से इन कीलों को घुमाने की व्यवस्था होती थी ताकि स्वरों को उतारा—चढ़ाया जा सके। अन्दर की ओर लकड़ी की एक नुकीली मुण्डेर बनायी जाती थी जो मेरु का काम करती थी और तार इसी पर स्थिर रहते थे।

अकबर के समय 'सारंगी' का वादन प्रचुरता से किया जाता था। यह अरबी संगीत का एक प्रमुख वाद्य था। रबाब की ही भाँति इसके उद्भव पर मतभेद है। इन्हुंदादब ने लामाक को इसका आविष्कारक माना है। अब्दुल पिदा इसका उद्भव फारस से मानते हैं तथा कैथलीन श्लेसिंगर भी इसे अरब से बाहर का बताती हैं। लेकिन यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि मजहर, कीरन, मुक्तर जैसे वाद्य अरबी मूल के थे जो कि गुणों के आधार पर सारंगी के पूर्वगामी प्रतीत होते हैं। भारत में रावणहस्त वीणा से इसका उद्भव जोड़कर देखा जाता है। संगीतराज नामक ग्रंथ में

बताया गया है कि यह लगभग दो फुट लम्बा होता था। इस तंतुवाद्य को कमान की सहायता से बजाया जाता था। आइन—ए—अकबरी में अबुल फजल सारंगी को रबाब से छोटा तथा 'गीचक' की तरह बजाया जाने वाला बताते हैं।<sup>11</sup>

इस काल का एक अन्य प्रमुख वाद्य **पिनाक** अथवा पिनाकी अथवा पिनाक वीणा था जिसको आइन में 'सुरवितान' कहा गया है। धनुष जैसे आकार वाला यह वाद्य कमान की मदद से बजाया जाता था। एक अन्य ग्रंथ संगीतोपनिषत्सारोद्धार में भी इसका उल्लेख मिलता है।

अकबरकालीन कुछ अन्य प्रमुख वाद्ययंत्रों की चर्चा की जाये तो वीणा की तरह दिखने वाले 'किंगारा' का नाम लिया जा सकता है। दो तारों वाला यह वाद्य आकार में वीणा से छोटा होता था। 'धड़' नामक पंजाबी वाद्य की चर्चा आइन में मिलती है। यह देखने में दुहुल जैसा किंतु आकार में उससे छोटा होता था। इसको बजाने वाले कलाकार धाड़ी कहे जाते थे। 'शहनाई' का प्रचलन भी 16वीं सदी में था। आइन में इसे शहना भी कहा गया है। इसमें सात छिद्रों वाली एक नलिका होती थी जिसमें उँगलियों से छिद्रों को दबाने व खोलने से स्वर निकलते थे। आइन—ए—अकबरी के साथ—2 वाद्यप्रकाश, संगीत पारिजात व संगीत रत्नाकर में 'ताल' नामक एक वाद्य का उल्लेख मिलता है। इसको मंजीरा भी कहते हैं। काँसे के दो गोल टुकड़ों के बीच में डोरी डालकर इन्हें बनाया जाता था तथा आपस में टकरा कर ध्वनि उत्पन्न की जाती थी। नक्कारखाने में बजाये जाने वाले बाजों में अबुल फजल द्वारा कुवर्गा, नक्कारा, करना, सरना, नफीर, सिंग व संज का नाम लिया गया है।<sup>13</sup> कुवर्गा अथवा दमामा लगभग 18 जोड़े बजाये जाते थे, जबकि नक्कारे 20 जोड़े बजाये जाते थे। नक्कारा बजाने में स्वयं बादशाह अकबर को महारथ हासिल थी। 'करना' सोने, चाँदी अथवा पीतल के बनाये जाते थे और न्यूनतम चार जोड़ी बजाये जाते थे जबकि भारतीय व ईरानी वाद्य 'सरना' न्यूनतम नौ जोड़े बजते थे तथा सुबह के वक्त इसको सूर्योदय से पूर्व सबको जगाने के लिए बजाया जाता था। 'सिंग' को गाय की सींग के आकार का तथा तांबे से बनाया जाता था और ये न्यूनतम दो जोड़े बजाये जाते थे। 'संज' अथवा झाँझ को तीन जोड़े बजाया जाता था।

बादशाह अकबर स्वयं संगीत में रुचि रखता था इसी कारण उसके द्वारा संगीत व संगीतकारों को प्रोत्साहन भी दिया गया। बदायूँनी 1581 की फतेहपुर सीकरी की एक घटना का जिक्र करता है जिसमें वह बताता है कि एक यूरोपीय वाद्य यंत्र का प्रदर्शन किया गया था जिसमें अकबर ने बहुत जिज्ञासपूर्वक रुचि दिखाई थी। इस वाद्य को बदायूँनी ने 'आर्गनूँ' कहा है।

वाद्यों के सन्दर्भ में ही कुछ संगीतकारों का नाम लेना आवश्यक है। इनमें तानसेन का नाम सर्वोपरि रखा जाता है। इन्हें अबुल फजल ने हजार वर्ष का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ कहा है। तानसेन को 'सुरबहार' नामक वाद्ययंत्र का आविष्कारक माना जाता है।<sup>15</sup> इसी प्रकार शेख बहाउद्दीन को 'कलमदान' वाद्य के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है। अकबर के समय वीरमण्डल खाँ स्वरमण्डल वादन में, शिहाब खाँ बीनवादन में तथा मोहम्मद हुसैन तम्बूरा वादन में प्रसिद्ध थे। अन्य कई निपुण वादक भी दरबार की शोभा बढ़ाते थे। जो संगीतज्ञ जिस वाद्य में निपुण होता था उसे

उसी वाद्य के नाम से बुलाया जाने लगता था जैसे— हुरुक बजाने वाले हुरुकियाँ तथा डफली बजाने वाले डफजन इत्यादि। हुरुकियाँ वर्ग के पुरुष ‘आवज’<sup>16</sup> तथा स्त्रियाँ ‘मंजीरा’ बजाती थीं। इसी प्रकार रणभूमि में सैनिकों के उत्साहवर्द्धन हेतु ढारी लोग ‘ढोल’ बजाते थे।

इस प्रकार, बिना किसी संदेह के यह कहा जा सकता है कि अकबर का युग संगीतवाद्यों की दृष्टि से एक स्वर्णिम दौर रहा जहाँ देशी एवं विदेशी सभी प्रकार के वाद्यों को समान स्थान व सम्मान शाही दरबार से प्राप्त हुआ और फलस्वरूप एक समृद्ध संगीत परम्परा की स्थापना संभव हो पायी।

### सन्दर्भ सूची:

1. बाबरनामा, अनु० बेवरिज, खण्ड.I पृ० 291.292
2. आइन—ए—अकबरी, अबुल फजल, अनु० एच०एस०जैरेट, पृ० 268
3. तंत्र त्रितन्त्रक लोके जन्मशब्देनोच्यते। (सं०२० वाद्या० टीका)
4. स्यूजिकल इन्स्ट्रूमेन्ट्स ऑफ द वर्ल्ड, कार्ल एंजेल, पृ० 186
5. संगीत सुधाकर—हरिपाल (पाण्डुलिपि), लालमणि मिश्र, पृ० 32
6. भारतीय संगीत वाद्य, लालमणि मिश्र, पृ० 77
7. आइन—ए—अकबरी, अबुल फजल, अनु० जैरेट, पृ० 269
8. स्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स ऑफ द वर्ल्ड, कार्ल एंजेल, पृ० 188
9. आइन—ए—अकबरी, अबुल फजल, अनु० जैरेट, पृ० 269
10. भारतीय संगीत वाद्य, लालमणि मिश्र, पृ० 136
11. द इवॉल्यूशन ऑफ इण्डियन क्लासिकल स्यूजिक, नीरजा भट्टनागर, पृ० 97
12. भारतीय संगीत वाद्य, लालमणि मिश्र, पृ० 107
13. आइन—ए—अकबरी, अबुल फजल, अनु० रामलाल पाण्डेय, पृ० 112
14. मुंतखब—उत—तवारीख, बदायूँनी, अनु० डब्यू० एच० लो, खण्ड II पृ० 299
15. संगीत मंजूषा, अंजू मुंजाल, पृ० 112
16. आइन—ए—अकबरी, अबुल फजल, अनु० जैरेट, पृ० 270